कुम्हरार और मौर्य स्थापत्य कला का 80 स्तंभ वाला सभागार

प्रिलिम्स के लिये:

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, मौर्य साम्राज्य, सम्राट अशोक, बौद्ध धर्म, केंद्रीय भूजल बोर्ड, साँची स्तूप, आजीवक संप्रदाय

मेन्स के लिये:

मौर्य साम्राज्य और प्राचीन भारत में महत्त्व, मौर्य वास्तुकला

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

चर्चा में क्यों?

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) ने **पटना के कुम्हरार स्थित मौर्यकालीन पुरातात्त्विक स्थल पर 80 स्तंभों वाले सभा भवन के अवशेषों के सर्वेक्षण** के प्रयास शुरू किये हैं।

- इस पहल से मौर्य साम्राज्य और वास्तुकला में उनके योगदान के प्रति वर्तमान रुचि पर प्रकाश पड़ता है

कुम्हरार के 80 स्तंभों वाले सभा भवन के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- **ऐतिहासिक महत्त्व: कुम्हरार का 80 स्तंभों वाला सभा भवन, मौर्य साम्राज्य (321-185 ईसा पूर्व)** से संबंधित है, जो प्राचीन भारत के महानतम राजवंशों में से एक था।
  - ऐसा माना जाता है कि सम्राट अशोक (268-232 ईसा पूर्व) ने इस हॉल में **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया था**, जिसका उद्देश्य **खंडित बौद्ध संघ को एकीकृत करने के साथ** और **धम्म (बौद्ध शिक्षाओं) का प्रचार** करना था।
    - यह घटना बौद्ध धर्म को वैश्विक धर्म के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण थी।
  - यह स्थल **मौर्य साम्राज्य के राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में पाटलिपुत्र (मौर्य राजधानी)** की भूमिका की पुष्टि करता है।
- **वास्तुशिल्पीय महत्त्व:** इस हॉल में 80 बलुआ पत्थर के खंभे हैं जो इसकी छत का आधार हैं।
  - बलुआ पत्थर और लकड़ी जैसी सामग्रियों का परिवहन सोन **-गंगा नदी** मार्ग से किया जाता था, जो मौर्य काल के दौरान योजना और संसाधन प्रबंधन को दर्शाता है।
- **पुरातात्त्विक खोजें:**
  - **प्रथम उत्खनन (1912-1915):** एक अक्षुण्ण स्तंभ, अन्य स्तंभों के स्थान को चिह्नित करने वाले 80 गड्ढे, तथा पत्थर के टुकड़े मिले।
    - राख की मोटी परतों के साक्ष्य से पता चलता है कि विनाश आग से हुआ था,**संभवतः इंडो-यूनानी आक्रमण के दौरान या बाद में हूणों के आक्रमण के दौरान।**
  - **दूसरा उत्खनन (1961-1965):** चार अतिरिक्त स्तंभ मिले।
- **संरक्षण चुनौतियाँ:** जल स्तर बढ़ने के कारण यह स्थल आंशिक रूप से जलमग्न हो गया, जिसके कारण **ASI को संरक्षण उपाय के रूप में वर्ष 2004-2005 में इसे मृदा से ढकना पड़ा।**
- **असेंबली हॉल की रीओपनिंग:** पटना में घटते भूजल स्तर और मौर्यकालीन विरासत में बढ़ती रुचि के कारण ASI द्वारा इस स्थल की रीओपनिंग की जा रही है।
  - **प्रारंभ में,** केंद्रीय भूजल बोर्ड **के सहयोग से, आर्द्रता और भूजल प्रभावों का अध्ययन करने के लिये 6-7 स्तंभों को उजागर किया जाएगा।**
  - इसके पश्चात् एक विशेषज्ञ समिति 80 स्तंभों को पूर्ण रूप से पुनः खोलने पर निर्णय लेगी, जिसमें संरक्षण और सार्वजनिक पहुँच के बीच संतुलन बनाया जाएगा।

मौर्यकला और स्थापत्य की मुख्य वशिषताएँ क्या हैं?

- **स्थापत्य के प्रकार: मौर्य स्थापत्य को दरबारी कला** (राजनीतकि और धार्मकि उद्देश्यों हेतु सुरचति) और **लोकप्रयि कला** (व्यापक रूप से सुलभ और स्थानीय परंपराओं से प्रभावति) में वर्गीकृत कयिा गया है ।

//

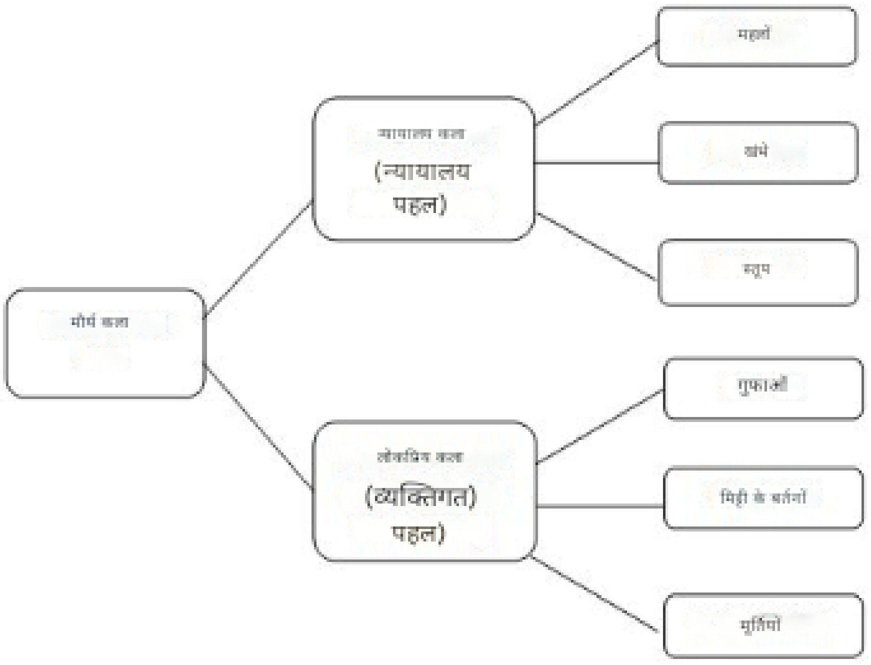

मौर्य दरबार कला:

- **महल: यूनानी इतिहासकार मेगस्थनीज ने मौर्य साम्राज्य के महलों की प्रशंसा करते हुए उन्हें उल्लेखनीय रचना बताया, जबकि चीनी यात्री फाहयान ने इन्हें ईश्वर प्रदत्त स्मारक कहा।**
  - चंद्रगुप्त मौर्य का महल **पर्सेपोलसि (अकेमेनडि साम्राज्य की राजधानी) के अकेमेनडि महलों से प्रभावति था।**
  - **नर्माण में प्रयुक्त होने वाली प्राथमकि सामग्री लकड़ी थी।**
  - उदाहरण: कुम्हरार में अशोक का महल और चंद्रगुप्त का महल।
- **स्तम्भ:** मौर्य स्तंभ ऊँचे, स्वतंत्र, अखंड हैं तथा चुनार से प्राप्त बलुआ पत्थर से नर्मिति हैं।
  - **इसमें चमकदार पॉलशि है, ये अकेमेनयिन स्तंभों से प्रभावति हैं।**
    - मौर्यकालीन स्तंभ चट्टानों को काटकर बनाए गए हैं, जो नक्काशी के कौशल को दर्शाते हैं, जबक**अकेमेनयिाई स्तंभों का नर्मिाण टुकड़ों में कयिा गया था।**
  - उत्तर भारत में पाए जाने वाले अशोक के स्तंभों में प्रायः शेर और बैल जैसी पशु आकृतयिाँ होती हैं, जो राजकीय प्रतीक हैं।
    - **इन्हें बौद्ध शकि्षाओं और दरबारी आदेशों के प्रसार के लयि बनवाया गया था, जनि पर पाली, प्राकृत, ग्रीक और आरमेइक भाषा** में शलिालेख अंकति थे।
  - मौर्य स्तंभों की संरचना में चार भाग हैं: जसिमें एकाश्म शाफ्ट**, एक कमल या घंटी के आकार का शीर्ष, एक स्तंभ और एक शीर्ष आकृत शामलि है।**
    - अकेमेनयिन स्तंभों के साथ समानताओं में **पॉलशि कयि गए पत्थर और कमल जैसी आकृतयिाँ,** साथ ही उद्घोष अंकति करने की प्रथा शामलि है।
- **स्तूप: सामान्यतः स्तूपों में एक बेलनाकार ड्रम, एक अर्द्धगोलाकार टीला (अंडाकार), एक हर्मकिा (वर्गनुमा रेलगि), और एक छत्र (तीन छतरी के आकार को सहारा देने वाला केंद्रीय स्तंभ) होता है, जो बौद्ध सद्धिांतों का प्रतनिधित्वि करता है।**
  - स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से नर्मिति था, जबकि बाह्य सतह पर पकी हुई ईंटों का प्रयोग कयिा गया था, जसि प्लास्टर से ढका गया था तथा लकड़ी की मूर्तयिों से सजाया गया था।
  - **साँची स्तूप (मध्य प्रदेश),** सबसे प्रसद्धि अशोक स्तूप। **पपिरहवा स्तूप (उत्तर प्रदेश) सबसे प्राचीन।**
    - **बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् के अन्य स्तूप:** राजगृह, वैशाली, कपलिवस्तु, अल्लकप्पा, रामग्राम, वेथापडि, पावा, कुशीनगर, पप्पिलवनि।

मौर्य लोकप्रयि कला:

- **गुफा स्थापत्य**: मौर्य काल के दौरान, **जैन और बौद्ध भकि्षुओं द्वारा गुफाओं का उपयोग वहिार के रूप में कयिा जाता था।** अत्यधकि

नक्काशीयुक्त अंदरूनी भाग और सजावटी प्रवेश द्वार इनकी विशेषता है।
    - **उदाहरण**: बिहार में **बराबर गुफाएँ** (4 गुफाएँ), अशोक द्वारा आजीवक **संप्रदाय के लिये निर्मित** (मक्खलिपुत्त गोशाल द्वारा स्थापित, इस बात पर बल दिया गया कि ब्रह्मांड ***?????? (??????)*** द्वारा शासित था)।
- **मूर्तियाँ**: यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियों की पूजा जैन धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में की जाती थी।
    - **उदाहरण**: **लोहानीपुर यक्ष (**नग्न पुरुष आकृति का धड़**),** और **दीदारगंज यक्षिणी,** पटना आदि।
- **मृद्भांड: उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्ड (NBPW) के रूप में पहचाने जाने वाले** मौर्यकालीन मृद्भांडो पर काला रंग और चमकदार सतह होती थी, जिसका उपयोग प्रायः विलासिता की वस्तुओं के लिये किया जाता था।

मौर्य साम्राज्य

- **चन्द्रगुप्त मौर्य (321-297 ईसा पूर्व)**: **मौर्य साम्राज्य के संस्थापक ने नंद वंश को समाप्त कर हिंदू कुश** जैसे क्षेत्रों पर कब्जा करके साम्राज्य का विस्तार किया।
    - 305-303 ईसा पूर्व में, उन्होंने **सेल्यूकस निकेटर के साथ एक संधि की,** जिससे उन्हें अतिरिक्त क्षेत्र प्राप्त हुए। बाद में **चंद्रगुप्त जैन धर्म के अनुयायी बन गए।**
    - **चाणक्य**, चंद्रगुप्त मौर्य (322 ईसा पूर्व - 297 ईसा पूर्व) और उनके उत्तराधिकारी बिंदुसार के शासनकाल के दौरान प्रधानमंत्री थे। साम्राज्य की सफलता में चाणक्य ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **बिंदुसार (298-272 ई.पू.)**: साम्राज्य का विस्तार दक्कन तक किया, जिसे **"अमित्रघात" (शत्रुओं का नाश करने वाला)** के नाम से जाना जाता है। बिंदुसार ने **आजीविक संप्रदाय** को अपनाया। **डेमेकस** उनके दरबार में एक यूनानी राजदूत था।
- **अशोक (272-232 ईसा पूर्व)**: **कलिंग युद्ध** के बाद, जिसमें भारी जनहानि हुई, उन्होंने **बौद्ध धर्म को अपना लिया** तथा **अपने धम्म (नैतिक कानून) के माध्यम से शांति को** बढ़ावा दिया। उन्होंने तीसरी बौद्ध परिषद का आयोजन किया और बौद्ध धर्म को विश्व स्तर पर फैलाया।
- **दशरथ (232-224 ई.पू.)**: शाही शिलालेख जारी करने वाले अंतिम मौर्य शासक दशरथ थे, जिन्हें क्षेत्रीय संघर्ष का सामना करना पड़ा।
- **सम्प्रति (224-215 ईसा पूर्व)**: विघटित क्षेत्रों पर मौर्य नियंत्रण पुनः स्थापित किया और जैन धर्म को बढ़ावा दिया।
- **शालिशुक (215-202 ईसा पूर्व)**: नकारात्मक प्रतिष्ठा के रूप में एक आक्रमणकारी शासक के रूप में जाना जाता था।
- **देववर्मन (202-195 ईसा पूर्व)**: संक्षिप्त शासनकाल, पुराणों में उल्लेखित।
- **शतधन्वन (195-187 ईसा पूर्व)**: बाहरी आक्रमणों के कारण कई क्षेत्रो का विघटन।
- **बृहद्रथ (187-185 ईसा पूर्व)**: अंतिम मौर्य सम्राट, **पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या,** मौर्य वंश के पतन का प्रतीक।

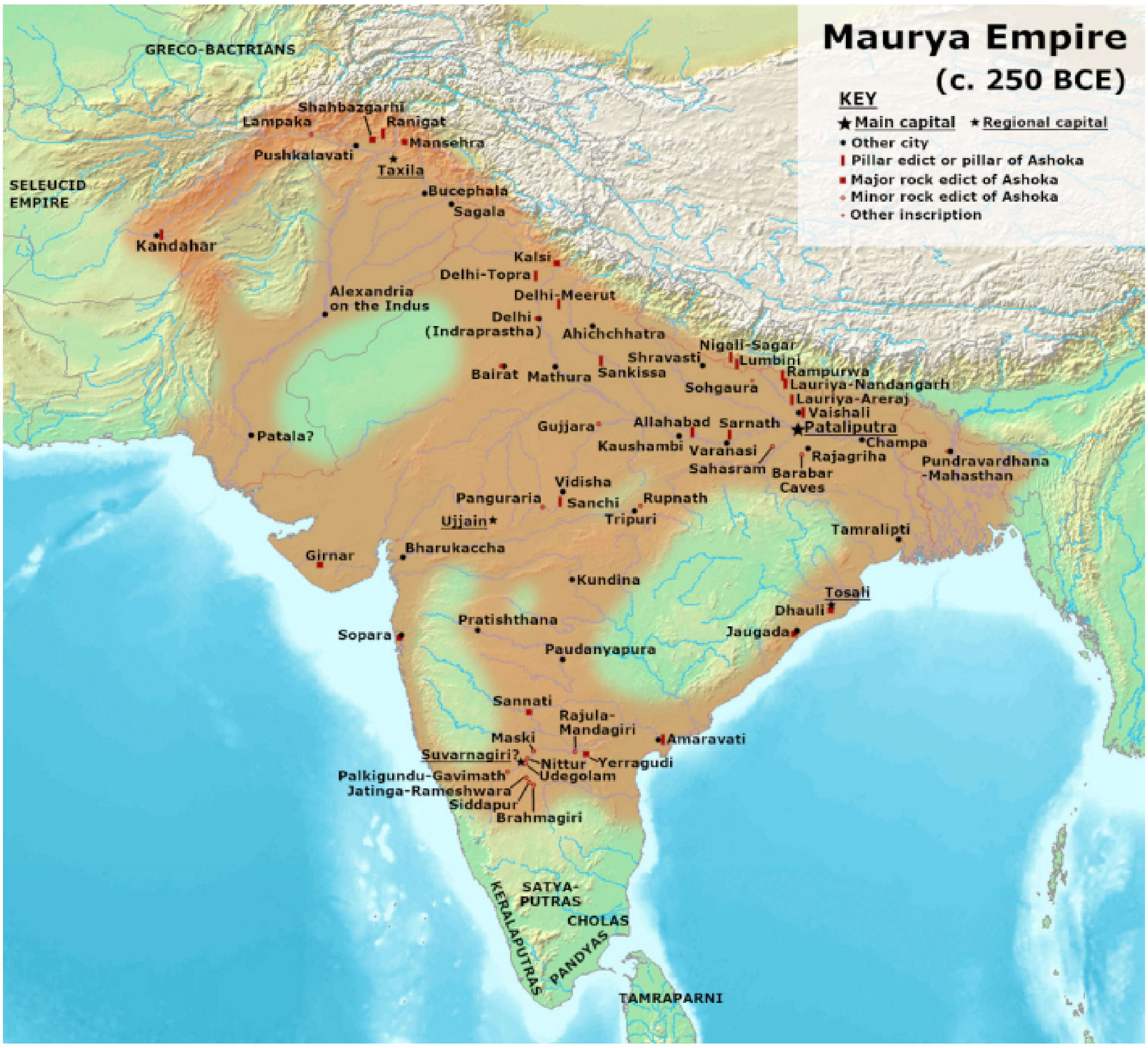
Maurya Empire
(c. 250 BCE)
KEY
★ Main capital
★ Regional capital
• Other city
▮ Pillar edict or pillar of Ashoka
■ Major rock edict of Ashoka
◦ Minor rock edict of Ashoka
· Other inscription
GRECO-BACTRIANS
SELEUCID EMPIRE
Shahbazgarhi
Lampaka
Ranigat
Mansehra
Pushkalavati
Taxila
Bucephala
Sagala
Kandahar
Kalsi
Delhi-Topra
Alexandria on the Indus
Delhi-Meerut
Delhi (Indraprastha)
Ahichchhatra
Nigali-Sagar
Shravasti
Lumbini
Bairat
Mathura
Sankissa
Rampurwa
Sohgaura
Lauriya-Nandangarh
Lauriya-Areraj
Vaishali
Patala?
Gujjara
Allahabad
Sarnath
Pataliputra
Kaushambi
Varanasi
Champa
Rajagriha
Pundravardhana -Mahasthan
Sahasram
Barabar Caves
Vidisha
Panguraria
Sanchi
Rupnath
Ujjain
Tripuri
Tamralipti
Girnar
Bharukaccha
Kundina
Tosali
Dhauli
Pratishthana
Sopara
Jaugada
Paudanyapura
Sannati
Rajula-Mandagiri
Maski
Amaravati
Suvarnagiri?
Nittur
Yerragudi
Palkigundu-Gavimath
Udegolam
Jatinga-Rameshwara
Siddapur
Brahmagiri
SATYA-PUTRAS
KERALAPUTRAS
CHOLAS
PANDYAS
TAMRAPARNI

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

- केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तहत ASI, **प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 तथा प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958. (AMASR अधिनियम)** के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत **राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों की सुरक्षा और रखरखाव करता है।**
  - ASI पुरातात्विक स्थलों और संरक्षित स्मारकों का सर्वेक्षण, उत्खनन और संरक्षण कार्य करता है।
  - ASI की स्थापना वर्ष 1861 में **ASI के पहले महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम** ने की थी। उन्हें **"भारतीय पुरातत्व का जनक"** माना जाता है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:

प्रश्न: भारत की सांस्कृतिक विरासत में मौर्य वास्तुकला के योगदान पर चर्चा कीजिये।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

[illegible]

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस शासक ने अपनी प्रजा को इस अभिलेख के माध्यम से परामर्श दिया ?

"कोई भी व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को महिमा-मंडित करने की दृष्टि से अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय के प्रति अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों की निन्दा करता है, वह अपितु अपने संप्रदाय को गंभीर रूप से हानि पहुँचाता है।" (2020)

(a) अशोक
(b) समुद्रगुप्त
(c) हर्षवर्धन
(d) कृष्णदेव राय

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस उभारदार मूर्तशिल्प (रिलीफ स्कल्पचर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूपचित्र के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) उल्लिखित है? (2019)

(a) कंगनहल्ली
(b) साँची
(c) शाहबाजगढ़ी
(d) सोहगौरा

उत्तर: (a)

प्रश्न: निम्नलिखित में से किसने सम्राट अशोक के शिलालेखों को सबसे पहले पढ़ा था? (2016)

(a) जॉर्ज बुहलर
(b) जेम्स प्रिंसेप
(c) मैक्स मूलर
(d) विलियम जोन्स

उत्तर: (B)